ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218
PP. No.- 220-222

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

मुगल कालीन चित्रकला का संक्षिप्त विश्लेषण

1. अंजलि
2. प्रो0 अलका तिवारी

1. शोध अध्येत्री, 2. प्रोफेसर– एन.ए.एस. कालेज, मेरठ, समन्वयक–ललित कला विभाग, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ (उ0प्र0) भारत

Received-01.12.2023, Revised-06.12.2023, Accepted-10.12.2023 E-mail: aavyasagar1993@gmail.com

सारांशः ***भारत में मुगल चित्रकला 16 वी0 और 18 वी शताब्दी के बीच की अवधि का काल रहा है। सर्वप्रथम भारत मे बाबर ने मुगल साम्राज्य की नींव रखी। जिसे क्रमशः हुमायू अकबर जहांगीर और शाहजहां ने आगे बढाया, तथा इनके ही काल में चित्रकला का विकास भी हुआ। मुगल चित्रकला का रूप फारसी और भारतीय मिश्रण शैली से बना है, तथा बहुत सी सांस्कृति पहुलुओं का भी योगदान तथा समावेश रहा है।***

कुंजीभूत शब्द– मुगल कालीन चित्रकला, मुगल साम्राज्य, फारसी और भारतीय मिश्रण शैली, प्रचीनतम पाण्डुलिपि, कलाप्रिय, रेखाकंन।

मुगल चित्रकला का इतिहास– भारत में मुगल चित्रकला हुंमायु के काल से विकसित हुई। जब यह भारत आया था, तब फारसी चित्रकारों अब्दलु समद और मीर सैयद अली को अपने दरबार में लेकर आया था। इन दोनों कलाकारों को चित्रकारी पुरे मुगल काल का स्वर्ण युग कही जाती है। इन दोनों कलाकारो की कलम से मुगल शैली पनपी। इन दोनों कलाकारों ने अपनी स्थिति ऐसी बनाई की मुगल शैली अपने चरम पर पहुंच गयी। इसके बाद अकबर के काल में शबीह चित्रण का कार्य सर्वश्रेष्ठ रहा तथा जहांगीर से लेकर शहाजहां तक यह मुगल शैली अपने चरम पर रही, परन्तु औंरगजेब के आने के बाद इस शैली का पतन होने लगा तथा धीरे धीरे यह दरबारी चित्रकला समाप्त हो गई।

मुगल चित्रकला का विकास– बाबर के काल में मुगल चित्रकला– बाबर के काल में ज्यादा मुगल चित्रकला देखने को नही मिलती, क्योकि बाबर का समय ज्यादा लडाई में गया। भारत में इसका राज्य सिहांसन 1526 ई0 से 1530 तक का माना गया है जहां ये नीति कुशल शासक था। दूसरी ओर एक अच्छा लेखक तथा कवि भी। अपनी आत्मकथा तुज्क–ए–बाबरी या बाबरनामा नामक पुस्तक तुर्की भाषा में लिखी। इसी ग्रन्थ में बिहजाद व शाहमुजफ्फर का उल्लेख मिलता है। उसने एक स्थान पर लिखा है कि "चित्रकारों में बिहजाद का नाम प्रमुख है"। बिहजाद को पूर्व का राफेल कहते है तथा एक अन्य स्थान पर लिख है "कि एक अन्य चित्रकार शाहमुजफ्फर था"। इन लेखो से प्रतीत होता है कि बाबर को चित्रकारो तथा चित्रों में निवेश रूचि थी। बाबर भारत आते समय अपने साथ शांहनामा (ईरानी राजाओं का इतिहास) नामक एक सचित्र प्रति भी लाया था। तैमूर चित्रकारी को चरमोत्कर्ष पर ले जाने का श्रेय बिहजाद को जाता है।

बाबर द्वारा निर्मित स्थापत्य–

1. पानीपत की काबुलीबाग मस्जिद (हरियाणा)
2. सम्भंल मस्जिद (हरियाणा)
3. बाग व्यवस्था (चौखाने वाले बाग)

बाबर कालीन चित्र–

4. बाबर बगीचें में दावत करते हुए
5. बाबर ग्वालियर दुर्ग का निरीक्षण
6. बाबर सोन नदी पार करते हुए।

हुंमायू के काल मे मुगल चित्रकला– बाबर का सबसे बडा पुत्र था। इसका जन्म 1508 ई0 में हुआ यह अपने पिता की तरह कला प्रेमी था। यह अपने साथ सचित्र पुस्तके रखता था। इसका अत्यधिक समय लडाई में ही निकला। इसलिए चित्रकला के प्रति रूचि व्यक्त नही कर सका। हुंमायू जब शाहतहमास्त के दरबार से सहायता के लिए ईरान पहुंचा तो उसका परिचय दो महान ईरानी कलाकार मीर सैय्यद अली "जुदाई" और ख्वाजा अब्दुस्समद "शीराजी" से परिचय हुआ। हुंमायु ख्वाजा 1515 ई0 मे दोनों चित्रकारों को ईरान से भारत लाया। हुंमायू के समय से ही हम्जानामा का चित्रण शुरू हुआ तथा हुंमायू की आत्मकथा को उसकी बहन गुलबदन बेगम ने फारसी भाषा में लिखा था। हम्जानामा हुंमायू काल की सबसे प्रचीनतम पाण्डुलिपि मे है। हुंमायू के काल में हम्जानामा के प्राचीनतम 4 खण्डो के 1000 चित्र मीर सैय्यद ने बनाये थे, यह विहजाद का शिष्य था।

अकबर के काल की मुगल चित्रकला– अकबर के शासनकाल तक उत्तरी भारत में एक विशाल साम्राज्य स्थापित हो चुका था। अकबर एक कलाप्रिय शासक था। अकबर की लोकप्रियता के कारण कलाकारों एवं विद्धानों को दरबार में सुखद आश्रय भी प्राप्त था। अकबर के काल में 6 गुजराती तथा 13 हिन्दू चित्रकार थे अकबर के समय के प्रमुख चित्रकार मीर सैय्यद अली, दसवंत बसावन, ख्वाजा अब्दुस्समद, मुकुद आदि थे, तथा आइने अकबरी में 17 चित्रकारों का वर्णन है। अकबर के शासन काल में बहुत विस्तुत क्षेत्र में मुगल चित्रों का चित्रण हुआ। क्योकि अकबर को महाकाव्यों, कथाओं तथा शबीह चित्रों में रूचि थी, इसलिए इसके काल के चित्रों मे रामायण, महाभारत और फारसी महाकाव्य भी शामिल है। अकबर के काल में बनी सबसे पहली पेटिंग तूतीनामा महत्वपूर्ण, रही। 152 भागों में इसे विभाजित किया गया है। दसवंत के द्वारा बनाये गये चित्र रम्जानामा मे मिलते है। रज्मनामा पाडुलिपि को मुगल चित्रकला के इतिहास में एक मील का पत्थर माना जाता है। अकबर के काल मे ही सबसे पहले भिंति चित्रण किया गया। बसावन अकबर के समय का सबसे प्रसिद्ध चित्रकार था। वह चित्रकला में सभी क्षेत्रों, रगो का प्रयोग, रेखाकंन, छवि चित्रकारी तथा भू–दृश्यों के चित्रण

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

है। अकबर कालीन चित्रों में नीला, लाल, पीला, हरा, गुलाबी और सिंदूरी रंगों का इस्तेमाल हुआ। सुनहरे रंग का प्रचुरता में प्रयोग किया गया है इस काल में मुगल चित्रकला पर राजपूत शैली का समावेश भी हुआ।

अकबर कालीन चित्रित ग्रन्थ–

1. हम्जानामा
2. खमशा निजामी (लैला मंजनू की प्रेमकथा)
3. रामायण
4. अनवर–ए सुहेलीध्सुलेही

अकबर कालीन स्थापत्य–

1. अकबर का मकबरा
2. आगरे का लाल किला
3. बुलन्द दरवाजा
4. मीना बाजार
5. दीवार आमध्दीवार खास
6. शेख सलीम चिश्तो का मकबरा
7. जोधा महल
8. बीरबल महल
9. जहांगीर महल, पंचमहल, इलाहाबाद किला, लाहौर का किला।
10. ऐतिहासिक चित्र
11. शाहनामा (ईरानी राजाओ का इतिहास)
12. तैमूरनामा (तैमूर वंश का इतिहास)
13. बाबरनामा
14. अकबरनामा
15. जीम उत– तवारीख (मंगोलों का इतिहास)

जहांगीर के काल की मुगल चित्रकला–

अपने युवाकाल से ही चित्रकला को संरक्षण दिया। मुगल सम्राट जहांगीर के समय में मुगल चित्रकला अपने चरम पर थी। इसमे हेरात के अकारिजा नाम चित्रकार को आगरा की चित्रशाला में नियुक्त किया गया। जहांगीर ने हस्तलिखित ग्रन्थो के विषयवस्तु को चित्रकारी करने की पद्धति को समाप्त किया और छवि चित्रों, प्राकृतिक दृश्यों को प्रमुखता थी। इसके समय के प्रमुख चित्रकारो में अबुलहसन दौलत, मनोहर, विसनदास, मूंसर, फारूख बेग थे। जहांगीर चित्रकला का बडा पारखी था इसके काल की चित्रकला को स्वर्ण युग कहते है। शिकार तथा राजप्रसाद तथा पक्षी चित्रण लघु चित्रण शैली में हुआ है। जहांगीर के समय मे ही परदाज छाया प्रकाश का प्रयोग किया गया। 1615 मे टांमस से जहांगीर के समय मे भारत आया।

S जहांगीर कालीन चित्र–

1. मरियम व चाइल्ड
2. शाहअब्बास का चित्र
3. शेखसूफी सन्त
4. जेब्रेरा, तुर्की काकँ,
5. तोता,
6. मोरनी
7. साइबेरियन सारस
8. जहांगीर का सिघांसन रोहण,
9. चीनार वृक्ष पर बिलहरियां

जहांगीर कालीन स्थापत्य–

1. जोधाबाई का मकबरा
2. दिलकुसा बाग
3. चश्मेनूर महल
4. अकबर का मकबरा
5. शीशमहल

शाहजहां कालीन मुगल चित्रकला– शाहजहां के समय में आकृति चित्रण और रंग सामज्सय में सभी कमी आ गई थी। उसके काल मे ही हाशिय बनाने शुरू किये गये। शाहजहां को अपने चित्रों को देवी की तरह बनवाने का शौक था, जैसे पीछे रोशनी का गोला होना। इसके प्रमुख चित्रकारों मे अनूप, मीर, हासिम फकीरउल्ला, नादिर, चिंतामणि प्रमुख थे। एक काल मे यवन सुदारियों, रंग महल,

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

विलास जीवन, ईसाई धर्म को चित्रित किया गया। शाहजहां के काल मे ही स्याह कलम चित्र बने, जिन्हे कागज की फिटकरी व सरेस से तैयार किया जाता है।

शाहजहां कालीन प्रमुख चित्र–

1. मुगल सरदार
2. सूफी
3. नृत्य करता शाहजहां
4. कबीर और सरदार
5. फारसी दूत
6. यूरोपियन राजदूत
7. यवन सुन्दरी
8. मेवाड के राजा भीम

शाहजहां कालीन स्थापत्य–

1. दिल्ली का लाल किला
2. दिल्ली की जामा मस्जिद
3. ताजमहल
4. मोती मस्जिद
5. दीवान ए–आम (आगरा)

औरगंजेब काल की मुगल चित्रकला– औरगजेब यद्यपि एक कट्टर मुसलमान शासक था, परन्तु उसके समय के युवावस्था से वृद्धावस्था के चित्र मिलते है। इससे इस्लाम के विरूद्ध चित्रकला को माना तथा इसे बन्द करवा दिया, परन्तु इसके शासन काल के अन्तिम दिनों मे इससे लघु चित्र शिकार खेलते हुए, दरबार लगाते हुए तथा युद्ध करते हुए प्राप्त होते है। औरंगजेब के समय के चित्रकार अन्य पहाडी राज्यों की और चले गये। "मनूची ने लिखा है। औरंगजेब की आज्ञा से अकबर के मकबरे वाले चित्रों को चूने से पोत दिया गया" औरगंजेब ने अधिकतर बने सभी चित्रों को पुतवाया तथा इमारतों को तुड़वा दिया। इसले बस "बीबी का मकबरा" नाम इमारत बनवाई जिसे रजिया उद्धदुरानी कहते है।, यह महाराष्ट्र में है।

मुगल चित्रकला के विषय– मुगल काल में कला के विभिन्न प्रकार के आयामो का विकास हुआ है, जैसे मूर्तिकला, चित्रकला, संगीत कला तथा स्थापत्य कला। इस कला को दरबारी कला कहकर भी बुलाया जाता है। उनके समय में केवल मुस्लिम जीवन एवं साहित्य को ही नही वरम् हिन्दू धर्म से भी प्ररेणा लेकर सामाजिक साहित्यक चित्रों को बनाया। अनके फारसी तथा भारतीय ग्रन्थो पर चित्र बने। पुस्तक चित्रण अधिक न करते हुए लघु चित्रण को महत्व दिया गया। विषयवस्तु का चुनाव प्रस्तुतीकरण, संयोजन, वर्ण नियोजन सभी कलाकार की कार्यप्रणाली की सिद्धहस्तता को प्रकट करने मे पूर्णतः समर्थ है। कृष्ण और राधा पर भी चित्रण कार्य किया गया। तथा साथ ही अतरंग स्थानों पर प्रेमिका तथा प्रेमी जोडे को भी चित्रित किया गया है। मुगल चित्रकला में लडाई पौराणीक कथाएं आदि में मुगल बादशाहों की लंबी कहानियों को बयान करने के लिए भी चित्रकला एक महत्वपूर्ण माध्यम बन गया था।

मुगल चित्रकला की विशेषताए– चित्रों के विषय दरबारी शानोंशौकत बादशाह की रूचियां आदि रहे। मुगल कालीन कला कोमल, आलेखन, सौन्दर्यकरण से पूर्ण है। बहुत महीन रेखाओ का कार्य किया गया है। बारीक तूलिका का प्रयोग किया गया है। भवनों का निर्माण में बारीक नक्काशी और फर्श की कारीगरी विशेष प्रसिद्ध है। अधिकतर चित्र कागज पर बनाए गए है। कपड़ें, भित्ति और हाथी दांत पर चित्र बने है। एक चश्म चेहरे बनाये गये है। चांदी, सोने के रंगों का प्रयोग प्रचुरता से किया गया है। भारतीय शैली का रंग विधान परम्परा से भित्रता रखता है। इस शैली में लाजवदी और सुनहरे रंग का इस्तेमाल किया गया है। गिलहरी के बालों से बने ब्रश का प्रयोग किया गया है।

निष्कर्ष– अतः हम कह सकते है कि चित्रकारी के क्षेत्र में मुगलों का विशेष योगदान रहा है। उन्होनें चित्रकारों की ऐसी जीवत पररम्परा का सूत्रपात किया जो मुगलों के पतन के बाद भी दीर्घकाल तक विभिन्न भागों मे कायम रही। मुगल कालीन चित्रकला की परिष्कृत तकनीक और विषयवस्तु की विविधता के लिए जानी जाती है। मुगल चित्रकला ने कई परवर्ती चित्रकला शैलियों व भारतीय चित्रकला शैलियों को प्रेरित किया जिसके कारण भारतीय चित्रकला में मुगल चित्रकला शैली का एक विशिष्ट स्थान है। मुगल शासक विभिन्न कलारूपों के संरक्षक थे।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. वर्मा, डा0 अविनाश बहादुर, भारतीय चित्रकला का इतिहास, प्रकाश प्रकासन बरेली।
2. गोस्वामी राकेश, स्मार्ट कला नोटस, गोस्वामी पब्लिकेशन प्रयागराज।
3. गैरोल, वाचस्पति, भारतीय चित्रकला, मित्र प्रकाशन, इलाहाबाद।
4. Paragatihasik Bhartiya chitrakala-paschimottar chhetrs ke utkiran chitr- Dr.Jagdish Gupta.

*****